फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 202 अप्रैल 2005

कहत कबीर

जिन्दगी काटने की बजाय जीवन जीने पर विचार करें। मनमाफिक कुछ कदम उठायें।

कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकर क्या-क्या कर सकते हैं (3)

अनुभवी कैजुअल वरकर : " न परमानेन्ट हूँ और न परमानेन्ट होने की उम्मीद। फिर डर किस बात का ? अपने शरीर की क्षमता से अधिक काम नहीं करता, अपने तन को तानता नहीं। अस्थाई नौकरी में खुद अपने शरीर को नहीं देखूँगा तो मेरा अपना और परिवार का क्या होगा? जिस मशीन की जानकारी नहीं है, अथवा पूरी तरह नहीं है, उसे चलाने को कहते हैं तो नहीं चलाता क्योंकि दुर्घटना हो सकती है और तब दूध में गिरी मक्खी की तरह बाहर फेंक देंगे। चोट लगने पर कम्पनियाँ कैजुअल वरकर का न उचित उपचार करवाती और न उचित मुआवजा देती। अगर बीमार हूँ, पूरी तरह स्वस्थ नहीं हूँ तो ड्युटी नहीं जाता क्योंकि जाने पर वो तो काम लेंगे ही – उन्हें सिर्फ काम से मतलब है, उन्हें हमारे शरीर से कोई मतलब नहीं है। फैक्ट्री में भोजन का समय होने पर भोजन करता हूँ – कितना ही अरजेन्ट काम बता कर रोकने की बात करें पर मैं रुकता नहीं। क्षमता अनुसार काम करता हूँ और बोलने का मौका नहीं देता पर फिर भी कोई बोलता है तो सीधा जवाब देता हूँ। गाली तो दूर की बात, गरम बोलना भी क्यों बरदाश्त करूँ ? निकालने अथवा रखने का निर्णय वो करें..... दरअसल मुख्य समस्या यह है कि हम लोग अपने अन्दर से डरे हुये हैं जबकि यह डर फर्जी है। अस्थाई नौकरी है – यहाँ नहीं तो दो पैसे कम या दो पैसे ज्यादा में और कहीं सही। 'माथे पे टोकरी तो कौन पूछता है नौकरी'।"

– घर पर, कार्यस्थल पर गलती होना, नुकसान होना स्वाभाविक है। जिन हालातों में हम हैं उनमें तो गलतियाँ होना, नुकसानों का होना और भी ज्यादा स्वाभाविक है। इसलिये गलती होने पर स्वयं को दोषी-अपराधी नहीं मानना चाहिये। काम बिगड़ने पर झूठ बोल कर हमें अपने मन को नहीं मारना चाहिये। नुकसान को सहज ढँग से लेना- बताना नैतिक मजबूती देता है। मैं गलती करता- करती ही नहीं की भाषा को त्यागना बनता है। गलतियाँ किससे नहीं होती?

– जो दिक्कतें हों उन्हें छिपाना नहीं चाहिये। यह सोच कर चुप नहीं रहना चाहिये कि मानेंगे नहीं अथवा डाँट देंगे। खुद कष्ट उठाना, ताने सुनना, जलील होना पर साहबों को बोलने से बचना की कोई तुक नहीं है। सुनेंगे नहीं सोच कर कहना ही नहीं झिझक- मात्र है। बोलने में डर- सा लगता है जबकि सहज- सामान्य आग्रह में डर के लिये कोई स्थान नहीं है। हद से हद मना ही तो करेंगे.... और साहबों को मना करने में दिक्कतें होती हैं। कम्पनी अथवा साहब की असुविधा की बजाय अपनी असुविधा पर ध्यान केन्द्रित करना बनता है।

– काम निपटाने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। निपटाने के फेर में शरीर नहीं तोड़ना। रफ्तार बढाना एक्सीडेन्ट का खतरा भी बढ़ाता है। रोज का काम है – कम्पनियों का काम कभी खत्म नहीं होता। और फिर, कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों के लिये तो एक फैक्ट्री में भी काम कभी खत्म नहीं होता – एक के पूरा होने पर दूसरे में लगा देते हैं। उनके लिये रोज अर्जेन्टी होती है पर अपने लिये सुरक्षित रह कर काम करना बनता है। कम्पनी की अरजेन्ट के फेर में अपना हाथ नहीं कटाना... जुगाड़ करने की बजाय आवश्यक औजार व साधन माँगने चाहियें।

– वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक समय विपरीत/शत्रुतापूर्ण माहौल में रहने को अभिशप्त है जबकि मन को कम से कम मारना सुफल जीवन की राह है। जिसको मन नहीं मानता वह कम से कम करना बनता है। मजदूर- हित की बातें इस कदर जायज हैं कि बढा- चढा कर कहने की आवश्यकता ही नहीं है। और फिर, झूठ- टेढापन हमारे अपने लिये बुरे हैं। सीधे- सच्चे, सहज- सरल कदम वाली राहें पुख्ता राहें हैं। विपरीत माहौल में तने रहते सुपरवाइजर- मैनेजर - डायरेक्टर की पीठ पीछे खिल्ली उड़ाने की बजाय उन्हें भी व्यक्ति के तौर पर लेना और उन से अपनी बात सहज ढँग से कहना साहब लोगों को भी स्वयं की त्रासद जिन्दगी को देखने को मजबूर करेगा.....

स्थाई होने, यह- वह बनने, यह लेने- वह बनाने, बच्चों को आसमान पर चढाने वाली इच्छाओं का क्षय हो रहा है, स्वयं को ही ख्वाब लगने लगी हैं। मजदूरों के मन- मस्तिष्क में जड़ जमाये बैठे वर्तमान व्यवस्था के अंकुर मुरझाने लगे हैं। कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की बढती सँख्या विकास- तरक्की- बेहतर भविष्य के भूतों की हवा निकाल रही है। बढती ठेकेदारी- प्रथा के दौर में "ठेकेदारी- प्रथा खत्म करो" के विलाप के स्थान पर आइये "मजदूरी- प्रथा का खात्मा" को साफ- साफ अपना ध्येय- निशाना बनायें। (जारी)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये:

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ● हरियाणा में सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी पर 90 रुपये 13 पैसे और महीने में 4 छुट्टी पर 2343 रुपये 37 पैसे; अर्धकुशल मजदूर को दैनिक 94 रुपये 36 पैसे और मासिक वेतन 2453 रुपये 37 पैसे; कुशल को दैनिक वेतन 100 रुपये 13 पैसे और मासिक 2603 रुपये 37 पैसे; उच्च कुशल मजदूर को दैनिक 111 रुपये 67 पैसे और मासिक वेतन 2903 रुपये 37 पैसे। यह कम से कम तनखायें हैं और 1 जनवरी 05 से लागू हैं। डी.ए. के 32 अंक से 73 रुपये 92 पैसे जनवरी से एरियर बनते हैं।

सत्या इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 100 एन एच-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1300 रुपये महीना तनखा देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रिजेक्शन के नाम पर फरवरी की तनखा में से पैसे काट लिये।"

एजीको कन्ट्रोल वरकर : " 20ए/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में काम करते 150 मजदूरों में से 30-40 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 1500-1700 रुपये। जनवरी की तनखा 1 मार्च को दी – फरवरी की आज 11 मार्च तक नहीं।"

इको टेक ऑटो मजदूर : " प्लॉट 233 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 1300 रुपये महीना तनखा – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। किसी अधिकारी के आने पर दूसरी कम्पनी से आये वरकर बताते हैं।"

खन्ना इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 101 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में महीने के तीसों दिन काम के बदले में 1800 रुपये देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। चोट लगने पर प्रायवेट में इलाज और ठीक होने से पहले ही काम में जोत देते हैं।"

सुपर सील मजदूर : " 12/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे डबल रेट से और कैजुअल वरकरों को सिंगल रेट से। तनखा 10 को देनी शुरू करते हैं – फरवरी की 16 मार्च तक दी।"

पोली मेडिक्युअर वरकर : "प्लॉट 104 सैक्टर - 59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

डायनेमिक इन्डस्ट्री मजदूर : " प्लॉट 5 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर को 1600 रुपये तनखा देते हैं और ओवर टाइम के 10 रुपये घण्टा। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि के दोनों हिस्से हम मजदूरों की तनखा में से काटते हैं।"

लालडी वरकर : " प्लॉट 11 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1400-1500 रुपये महीना तनखा – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। वेतन दो किस्तों में – फरवरी तनखा की पहली किस्त भी आज 12 मार्च तक नहीं दी है।"

अलपाइन इन्डस्ट्रीज मजदूर : "सैक्टर-31 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट – साप्ताहिक छुट्टी नहीं। तीसों दिन 12 घण्टे काम के बदले महीने में 2500 रुपये देते हैं।"

नटराज वरकर : " प्लॉट 66 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1800 रुपये। रोज 2 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान सवा की दर से। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

कल्पना फोरजिंग मजदूर : " प्लॉट 35 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम करते 800-900 में से एक तिहाई की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। इधर एक मजदूर की उँगली कटी – कोई क्षतिपूर्ति नहीं।"

मैटल फोर्म्स वरकर : "प्लॉट 61 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1400 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर : " 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों और स्टाफ को फरवरी की तनखा आज 16 मार्च तक नहीं दी है।"

स्काई पैक वरकर : " सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एस.पी.एल. मजदूर : "प्लॉट 48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे गये हम 500 वरकर 12-12 घण्टे की शिफ्टों में काम करते हैं – साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। हमें 12 घण्टे के 80-85-90 रुपये लगाते हैं। फरवरी की तनखा आज 18 मार्च तक हमें नहीं दी है।"

ओरियन्ट स्टील वरकर : " 20/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा आज 17 मार्च तक नहीं दी है। कम्पनी चौकीदारों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है और 12 घण्टे रोज पर महीने के 2200 रुपये देती है।"

के.आर. रबराइट मजदूर : " प्लॉट 37 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1500 और ऑपरेटर की 2000 रुपये – कुछ वरकरों को तो 12 घण्टे पर महीने में 1500 रुपये देते हैं।"

ब्राइट ब्रॉदर्स वरकर : " प्लॉट 16-17 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते – पर्व/त्यौहार की छुट्टी भी नहीं। ओवर टाइम के पैसे मात्र 10 रुपये घण्टा के हिसाब से देते हैं।"

सिकन्द लिमिटेड मजदूर : "61 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा 1 मार्च को दी – फरवरी की आज 11 मार्च तक नहीं।"

सिफ्टर इन्टरनेशनल वरकर : " प्लॉट 86 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1600-1800 रुपये महीना तनखा देते हैं। तीन साल ई.एस.आई. व पी.एफ. काटने के बाद अब नये सिरे से कम्पनी यह कर रही है।"

क्लच आटो मजदूर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जनवरी की तनखा 28 फरवरी तक दी। फरवरी का वेतन आज 16 मार्च तक नहीं दिया है। इधर एक की जगह दो मशीनें चलाने के लिये वरकरों पर मैनेजमेन्ट दबाव डाल रही है।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद–121001

दिल्ली से–..(पेज चार का शेष)

डिलाइट हाइटेक वरकर : " प्लॉट बी-233 ओखला फेज-I स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों को 2000 रुपये महीना तनखा देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

एफ-1/3 ओखला फेज-I में मजदूर "कम्पनी का नाम मुझे नहीं मालूम। हैल्परों को यहाँ 1300 रुपये महीना तनखा देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

कुछ फुरसत में

(पेज तीन का शेष)

और ठेकेदार के जरिये रखे 400 वरकर काम करते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2400 रुपये देते हैं।"

जे बी एम ऑटोकम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 133 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 12 घण्टे बाद भी पूछ कर ही जा सकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मेन्टेनेन्स विभाग और टूल रूम में ही स्थाई मजदूर हैं। फैक्ट्री में उत्पादन का पूरा कार्य दो दर्जन ठेकेदारों के जरिये रखे 1500 से ज्यादा मजदूर करते हैं – 100 कैजुअल वरकर भी हैं। हैल्परों को 1600 रुपये तनखा। डी.ए. के पैसे तो स्थाई मजदूरों को भी नहीं देते। फैक्ट्री में 2000 मजदूर काम करते हैं पर कैन्टीन नहीं है – भोजन करने के लिये स्थान नहीं।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 300 कैजुअल और 5 ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 वरकर काम करते हैं। कैजुअलों को 12 घण्टे पर 26 दिन के 2500 रुपये देते हैं और ठेकेदारों के जरिये रखों को रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 2400 रुपये देते हैं। कैजुअलों को फरवरी की तनखा 12 मार्च को दी, ठेकेदारों के जरिये रखों को आज 17 मार्च तक नहीं दी है।"

कुछ फुरसत में

पेन्ट्स एण्ड कोटिंग्स मजदूर "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री के हम मजदूर 1995 में एक यूनियन से जुड़े और 1996 में कम्पनी ने फैक्ट्री बन्द कर हम सब को नौकरी से निकाल दिया। श्रम विभाग में शिकायत, डिमाण्ड नोटिस। मामला चण्डीगढ़ हो कर यहाँ श्रम न्यायालय पहुँचा। कम्पनी उपस्थित नहीं हुई, मामला एकतरफा चला, लम्बा चला – हम 23 में से 20 लोग हिसाब ले गये। आखिरकार श्रम न्यायालय ने हम 3 के पक्ष में फैसला किया। कम्पनी द्वारा आदेशित 1,17,910 रुपये अदा नहीं करने पर मामला फिर चण्डीगढ़ गया और वहाँ से सितम्बर 04 में यहाँ डी.सी. के पास वसूली के लिये भेजा गया। डी.सी. ने इसे लेबर अफसर-सर्कल-3 के पास भेज दिया और यह साहब भी 6 महीने से हमें टरका रहे हैं। फैक्ट्री में हमारी 5 साल की सर्विस थी और 9 साल से कोर्ट के चक्करों में हम परेशान हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "फार्मट्रैक प्लान्ट में हम कैजुअल वरकर ई.एस.आई. कार्ड के लिये फार्म माँगते हैं तो कम्पनी कहती है कि ई.एस.आई. लोकल ऑफिस जा कर लाओ। लोकल ऑफिस वाले कहते हैं कि फार्म कम्पनी से लो, फार्म कम्पनी को दे रखे हैं। इधर प्रोविडेन्ट फण्ड ने अतिरिक्त परेशानी खड़ी कर दी है – छह महीने काम करने के बाद निकाल दिये जाने पर डबल की जगह फण्ड हमें सिंगल दिया जाने लगा है। इससे तो अच्छा है कि हमारी तनखा से पी.एफ. के पैसे काटे ही नहीं जायें ताकि हम बैंक में खाता खुलवाने, पी.एफ. फार्म भरवाने-जमा करवाने-चक्कर और इन्तजार की परेशानियों से तो बचें।"

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास मजदूर : "64 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री से 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर नवम्बर 04 में निकाल दिये पर उनकी 2-3 महीनों की तनखायें अब भी बकाया हैं। इधर हम 180 स्थाई मजदूरों पर काम का भारी बोझ है और उत्पादन के लिये दबाव-दर-दबाव परन्तु दिसम्बर-जनवरी-फरवरी की तनखायें हमें आज 12 मार्च तक नहीं दी हैं। तनखा माँगने, छुट्टी करने पर कम्पनी गेट रोक देती है। दिसम्बर 03 से ओवर टाइम का भुगतान नहीं.... जुलाई 04 से देय डी.ए. के पैसे नहीं। यूनियन की न ही कहें तो अच्छा है।"

कनिष्क इन्टरनेशनल वरकर: "प्लॉट 19 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखों को 800-1200-1400 रुपये तनखा देते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदार कहता है कि पी.एफ. चाहते हो तो तुम्हारी तनखा से ही 24 प्रतिशत काटूँगा। कैजुअल वरकरों को 1700-2000 रुपये तनखा। रोज 12 घण्टे तो काम करवाते ही हैं, लगातार 24 घण्टे भी रोक लेते हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती। फैक्ट्री में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है।"

साधु फोरजिंग मजदूर : "प्लॉट 140 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में महीनें के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। फैक्ट्री में भारी प्रदूषण की वजह से आधे मजदूर-साँस, पेट की बीमारियों से ग्रस्त हैं। फैक्ट्री में काम करते 800 मजदूरों में से 500 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है और इनमें हैल्परों की तनखा 1400-1500 रुपये (दस्तखत 2200 पर करवाते हैं) – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और एक्सीडेन्ट होने पर घर जाओ। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है।"

शंकरा फैब प्रोसेसर्स वरकर : "प्लॉट 96 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं – सुबह 9 से साँय 7 तक और शाम 7 से अगले रोज सुबह 9 बजे तक। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1800 और ऑपरेटर की 2150 रुपये। तनखा देरी से -- फरवरी का वेतन 24 मार्च को दिया। सौ में से 25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ – ई.एस.आई. कार्ड उन्हें भी नहीं। फैक्ट्री में भोजन करने का स्थान तक नहीं और डाइंग मास्टर, सुपरवाइजर गाली देते हैं।"

रेक्सोर मजदूर : "प्लॉट 99 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों के कार्ड मेन गेट पर और कैजुअल वरकरों के कार्ड मैटेरियल गेट पर रखते हैं। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं और कार्ड पर कम्पनी का नाम नहीं। अधिकारियों के छापे के समय कैजुअल वरकरों को फैक्ट्री से बाहर निकाल देते हैं और उस दिन की दिहाड़ी नहीं देते – हाल ही में ऐसा फरवरी में हुआ।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में डाई कास्टिंग में 8 घण्टे की शिफ्ट हैं और उत्पादन वाले अन्य 11 विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। उत्पादन कार्य करते 700 मजदूरों में से 400 को हर वर्ष नवम्बर में निकाल देते हैं और फिर मार्च में रखते हैं। पाँच मजदूरों पर एक स्टाफ वाली कम्पनी ने दिवाली पर कुछ मजदूरों को एक किलो बर्फी, कुछ को एक किलो मिक्स मिठाई और कुछ को आधा किलो मिठाई दी। बोनस सब मजदूरों को देय है पर सिर्फ स्थाई मजदूरों को दिया और वे 20 ही हैं। कम्पनी ने अक्टूबर 04 से 4 घण्टे ओवर टाइम को 3½ घण्टे करार दिया है और 14 घण्टे ड्युटी होने पर जो 6 रुपये रोटी के देती थी उन्हें 15 घण्टे लगातार ड्युटी होने पर देने लगी है। फर्जीवाड़े के तौर पर सेफ्टी डिपार्ट भी है जिसका सुरक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। सेफ्टी वाले सब (10) वरकर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और वे बफिंग विभाग में कचरे से भरते ड्रमों को रिताते व अन्य सफाई करते हैं। भारी प्रदूषण ने सेफ्टी डिपार्ट के सब वरकरों को साँस की तकलीफें दी हैं – फैक्ट्री में खून की उल्टी करते हैं.... और कम्पनी चेयरमैन ने गेट पर पर्यावरण पर प्रवचन टाँगा हुआ है। पुलिस के अलावा तीन सेक्युरिटियाँ फैक्ट्री की सुरक्षा में हैं – गार्ड कहते हैं कि यहाँ ड्युटी लगती है तब बीमार पड़ जाते हैं क्योंकि प्रदूषण के संग यहाँ लगे कैमरे हर समय डराये रखते हैं।"

☞

बोल्ट टाइट वरकर : "प्लॉट 77 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 2-4 ही स्थाई हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्पर की तनखा 1600 रुपये। मशीन चलाने वालों को कैजुअल वरकर कहते हैं और बाकी मजदूरों को ठेकेदार के। चार महीने पहले अधिकारियों के छापे के समय मैनेजमेन्ट ने ज्यादातर मजदूरों को इधर-उधर कर दिया था। छापे के बाद फैक्ट्री में बदला कुछ नहीं है।"

क्रियेटिव डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग वरकर : "14/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 200 स्थाई, 200 कैजुअल (बाकी पेज दो पर)

शिवालिक ग्लोबल

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 2000 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 400 के ही हैं। बरसों से यहाँ काम कर रहों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी तनखा देरी से देती है – जनवरी का वेतन 25 फरवरी को दिया था और फरवरी का आज 16 मार्च तक नहीं दिया है। इधर मार्च माह में दो-तीन बार अधिकारी फैक्ट्री आ चुके हैं। अधिकारियों के सामने कम्पनी कुछ मजदूरों से कहलवाती है कि तनखा दे दी है। जिस विभाग में अधिकारी जाते हैं वहाँ से मैनेजमेन्ट उन मजदूरों को निकाल देती है जिनके ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं – कहीं भी जाओ, दूसरे विभाग में जाओ, कैन्टीन में जाओ, बाहर जाओ....

"शिवालिक ग्लोबल में 12 घण्टे तो रोज काम लेते ही हैं, जबरन 24 घण्टे भी रोक लेते हैं। आराम के लिये एक घण्टे का समय भी नहीं देते – 24 घण्टे रोकते हैं तब मात्र 4 रोटी देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं और जनवरी में किये ओवर टाइम का भुगतान आज 16 मार्च तक नहीं किया है।

"शिवालिक ग्लोबल में हैल्पर की तनखा 1700 और ऑपरेटर की 2200 रुपये महीना है। अधिकतर मजदूरों को सादे कागज पर वेतन देते हैं – रजिस्टर नहीं, टिकट नहीं।

"फैक्ट्री में साहब लोग गाली देते हैं। धक्के मार कर निकाल भी देते हैं। हिसाब के लिये दो महीने बाद आने को बोलते हैं....."

दिल्ली से-

जनवरी से देय डी.ए. की मार्च - अन्त तक दिल्ली सरकार द्वारा घोषणा ही नहीं।

एच वी इन्टरप्राइजेज मजदूर : "प्लॉट बी-237 ओखला फेज-I स्थित फैक्ट्री के बाहर नाम एल.एम. सागर एक्सपोर्ट लिखा है। यहाँ हम 200 मजदूर काम करते हैं। कहने को सुबह 9½ से श्याम 6¼ तक ड्युटी है पर रोज रात 8 बजे तक तो रोकते ही हैं और महीने में 8 दिन तो रात 8 बजे के बाद भी काम करवाते हैं। कम्पनी कोई छुट्टी नहीं देती। हम से पीस रेट से काम करवाते हैं और फरवरी की तनखा में भारी गड़बड़ी की है — किसी के 500, किसी के 1000, किसी के 1500 रुपये काट लिये हैं। कुछ की तो तनखा ही 1400 रुपये बनाई है। विरोध में हम ने तनखा लेने से इनकार किया और 16 मार्च को दोपहर काम बन्द कर दिया। कल भी हम फैक्ट्री में बैठे और आज 18 मार्च को भी काम बन्द कर रखा है।"

बिक्रम ओवरसीज वरकर : "प्लॉट एक्स-59 ओखला फेज-II स्थित फैक्ट्री में 1500 से ज्यादा मजदूर काम करते हैं और सुबह 9 से रात 9 बजे तक एक शिफ्ट है -- ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। डराते रहते हैं कि होली के बाद फैक्ट्री बन्द होगी। हैल्पर को 2400 रुपये महीना तनखा देते हैं।"

ओरियन्ट क्राफ्ट मजदूर : "प्लॉट बी-26 ओखला फेज-I स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात 9 बजे तक एक शिफ्ट है और फिर नाइट लगाने की कहने पर कोई वरकर इनकार करता है तो उसे नौकरी से निकालने की धमकी देते हैं पर .... पर ओवर टाइम कानून का कम्पनी पालन करती है! कानून है कि तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं करवाया जायेगा इसलिये.... इसलिये ओरियन्ट क्राफ्ट कम्पनी ने नियम बना रखा है कि एक महीने में ओवर टाइम के 16 घण्टे ही दिखाने हैं, ओवर टाइम काम के अधिकतर घण्टे दिखाने ही नहीं हैं। महीने में 16 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान कम्पनी डबल दर से करती है और जिन घण्टों को दिखाती नहीं उनका भुगतान सिंगल रेट से करती है। इस हरकत का हम मजदूरों में काफी विरोध है — काम भी बन्द किया है पर अब भी कम्पनी ओवर टाइम के नाम पर महीने में 16 घण्टे ही दिखाती है। यहाँ फैक्ट्री में 2000 मजदूर काम करते हैं जिनमें 25 प्रतिशत ही स्थाई हैं और स्थाई मजदूरों को दबाने-धमकाने के लिये मैनेजमेन्ट उनका ओरियन्ट क्राफ्ट की नोएडा, गुड़गाँव फैक्ट्रियों में ट्रान्सफर करती रहती है। काम का भारी बोझ है — पानी पीने, पेशाब करने पर पाबन्दियाँ हैं, छुट्टी करने पर निकालने की धमकी और अधिक उत्पादन के लिये डाँटना हर समय।"

अजय ट्रान्सपोर्ट ड्राइवर : "प्लॉट 274 ओखला मण्डी स्थित कार्यालय पर [illegible] ड्राइवरों को 24 घण्टे वहाँ रखने की कोशिश करते हैं। कहते हैं कि दफ्तर में नहा-धो लिया करो और गाड़ी में सो लेना। दिन-रात के किसी भी समय सवारी को जहाँ कहें वहाँ ले जाना होता है। खाने-सोने का कोई समय नहीं। दफ्तर पर नहीं रहो तो भी सुबह 9 बजे आये को रात 12 बजे से पहले तो छोड़ते ही नहीं। इस सब के बदले में 4000-4500 रुपये महीना — ओवर टाइम का एक पैसा नहीं।"

आनन्द इन्टरनेशनल एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट डी-3 ओखला फेज-I स्थित फैक्ट्री में कारीगरों को 15½ रुपये प्रतिघण्टा और बाकी मजदूरों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 2863 रुपये देते हैं — रविवार के लिये 60 रुपये अतिरिक्त। ड्युटी सुबह 9 से रात 9—रात 11½ तक रोकते हैं तो 40 रुपये और अगली सुबह के 4 बजे तक रोकते हैं तो 80 रुपये अतिरिक्त देते हैं।"

(बाकी पेज दो पर)

विचारणीय

हत्या के लिये विज्ञान

यहाँ हम हत्या में प्रयोग होते अस्त्र-शस्त्र के निर्माण में विज्ञान की भूमिका की चर्चा नहीं करेंगे। विज्ञान आधारित उत्पादन पद्धति द्वारा की जा रही हत्या-दर-हत्या की चर्चा भी हम यहाँ नहीं करेंगे। मानव मन-मस्तिष्क में गहरे बैठी मानव वध विरोधी बाधाओं को पहचानने व उन से पार पाने के लिये विज्ञान में की जा रही खोजों की कुछ चर्चा यहाँ करेंगे।

प्रशिक्षण और उकसावों के बावजूद सैनिकों द्वारा हत्या से परहेज सेनाओं और सरकारों की गहन चिन्ता-चिन्तन का विषय है। दिन में ही युद्ध और चन्द रोज के लिये ही आमने-सामने युद्ध को बीसवीं सदी ने बीते जमाने की चीज बना दिया। दिन के संग रात को भी युद्ध.... 60 दिन लगातार इन हालात में 98 प्रतिशत सैनिक मनोरोगों के शिकार हो जाते हैं — 2 प्रतिशत पहले ही पागल थे।

1914-1918 और 1939-45 में सरकारों के बीच चली विश्वव्यापी मारकाट में 2½ व 5 करोड़ लोग मारे गये परन्तु अधिकतर सैनिकों ने एक गोली तक नहीं चलाई थी। सेनाओं-सरकारों ने कारणों की खोज और उनसे निपटने के तरीके ढूँढने के लिये सामाजिक विज्ञान-भौतिक विज्ञान के ज्ञानियों को अतिरिक्त साधन उपलब्ध करवाये.....

जीव-जन्तुओं की प्रत्येक योनि में अपनी योनि के किसी का वध अपवाद है — योनि के अस्तित्व का आधार है यह। एक ही योनि के दो जब आपस में कभी लड़ते हैं तब भी एक-दूसरे पर इस प्रकार वार करते हैं कि चोट घातक नहीं हो। जबकि, दो योनियों के आपस में लड़ते हैं तब घातक चोट मारने से परहेज वाली बात नहीं होती। सींगधारी जीव हों चाहे नुकीले दाँतों वाले — सब में अपनी योनि के किसी का वध करने से परहेज है। मानव के मन-मस्तिष्क में भी कहीं बहुत गहरे मानव वध से ऐसा ही परहेज है।

मृत्यु-भय और हत्या करने की नौबत मनुष्य में एक ही प्रकार की शारीरिक प्रक्रियायें उत्पन्न करती हैं। मनुष्यों को अन्य जीवों से अलग करने वाला मस्तिष्क का अग्र भाग ऐसी स्थितियों में बन्द हो जाता है। हत्या करने अथवा मृत्यु की नौबत आने पर मस्तिष्क के अग्र भाग द्वारा काम करना बन्द कर देने पर मध्य-मस्तिष्क नियन्त्रण की स्थिति में आ जाता है। मध्य-मस्तिष्क में मानव और अन्य स्तनधारी जीव एक जैसे हैं। और, मध्य-मस्तिष्क में कहीं बहुत गहरे अपनी योनि के किसी का वध प्रतिबन्धित है.....

वैज्ञानिकों का सेनाओं-सरकारों को सुझाव : मानव को मानव वध के लिये तैयार करने के वास्ते ऐसा प्रशिक्षण-प्रशिक्षण-प्रशिक्षण देना जो हत्या करने को मन-मस्तिष्क के दायरे से निकाल कर एक क्रिया-प्रतिक्रिया मात्र में बदल दे। "बुल्ज आई" (साण्ड की आँख) की बजाय प्रशिक्षण दौरान मानव आकृतियों पर गोली चलाना, भूसे से भरे मानव आकारों में बन्दूक पर लगी छुरी घुसाना.... फिल्मों और खासकरके वीडियो खेलों में मानव आकृतियों पर गोलियाँ दागना। मानव वध के अपराधबोध के कारण मनोरोगी बनने से बचाने के लिये सैनिकों को प्रशिक्षण के दौरान और खासकरके हत्या अभियान के बाद मनोविज्ञान विशेषज्ञों की सहायता उपलब्ध कराना.....

इधर दुनियाँ-भर में मानवों पर म[illegible] द्वारा घातक आक्रमणों में दिन दूनी रात चौ[illegible] वृद्धि हो रही है... वीडियो खेलों में मानव आकृतियों पर गोलियाँ चलाते 10 [illegible] वर्ष के बच्चे भी असली गोलियाँ चला कर हत्यायें करने लगे हैं। हालात हर जगह सतत और अनन्त युद्ध के बने हैं।

ऐसे में विश्व-भर में सेनायें अधिकाधिक पुलिस की भूमिका में आ रही हैं और पुलिस अस्त्र-शस्त्रों में सेना की शक्ल अख्तियार कर रही हैं। मण्डी-मुद्रा के दबदबे को कायम रखने के लिये सरकारों को बड़े पैमाने पर योद्धाओं की जरूरत है। ईश्वर-अल्लाह-गॉड-धर्म-आत्मा-परमात्मा-अध्यात्म निरपेक्ष भाव से हत्या करने वाले योद्धाओं की पूर्ति नहीं कर पा रहे। विज्ञान की विभिन्न शाखायें निरपेक्ष भाव से हत्या करने वाले योद्धाओं के निर्माण-उत्पादन में लगी हैं। और, भगवा[illegible] व विज्ञान का मेल मानव योनि के विनाश के लिये पर्याप्त आधार प्रदान करता लगता है।

(अमरीका सरकार की सेनाओं द्वारा किये जा रहे विशेष अध्ययनों से जुड़े कर्नल डेविड ग्रॉसमैन के 1999 के एक भाषण से हम ने जानकारियाँ ली हैं — भाषण की प्रति एक मित्र ने भेजी।)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।